सारांश

भारतीय भाषा और साहित्य में पलि भाषा और साहित्य का अपना महत्व है। इसकी अपनी अलग पहचान है। पलि भाषा में पालि साहित्य का विशाल भंडार है। थेरी गाथा उनमें से एक हैं। यह पूरे विश्व में महिलाओं के लिये प्रेरणा श्रोत हैं। यह ग्रन्थ बौद्ध सिद्धान्तों, नैतिक नियमों, निर्वाण, शील, समाधि, प्रज्ञा का जीवन अनुभवों पर आधारित हैं। प्राचीन समय की बौद्ध परम्परओं में भिक्खुणीओं के रहन-सहन और उनके अनुभव को काव्य के रूप वर्णन किया गया है, जिन्होने अपने जीवन में ही निर्वाण पद को प्राप्त कर लिया था। ये गाथाए बौद्ध धर्म की भिक्खुणी परम्पराओं को बताती हैं और वर्तमान समय की भिक्षुणियों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करती है।

थेरीगाथा में, वैशाली नगर की आम्रपाली का भी वर्णन किया गया है। वह भगवान बुद्ध से मिली थी और वह उनके उपदेशों से प्रभावित हो कर भिक्खुणी बन गई थी। उसने अपना शेष जीवन एक आदर्श भिक्खुणी के रूप में व्यतीत किया था।

थेरी-गाथा में वर्णित हैं कि थेरिया सभी वर्गो से आयी थी। सभी ने अपने जीवन के अनुभवों और समाज व्यवस्था के बारे में वर्णन किया हैं। उन्होनें समाज में स्त्रियों के प्रति व्यवहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास को बताया हैं। हर कोई अपने जीवन में ही बौद्ध धर्म के माध्यम से मुक्ति, ज्ञान, परमशांति और निर्वाण प्राप्त कर सकता है। उन्हे अपने परिवार में सभी प्रकार की सुख सुविधाओं में दुख, अज्ञान का अनुभव हो रहा था। उन्होने अनुभव किया की पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड व रूढ़ीवादी परम्पराओं पर चलने से मन की शुद्धता संभव नहीं है और जीवन की स्वतंत्रता और मुक्ति का मार्ग बौद्ध विचारों, सिद्धान्तों पर चलने में ही है।

थेरीगाथाओं में मनोदशा, अन्धविश्वास, कर्मकाण्ड से मुक्ति एवं सत्य की खोज के बारे मे बताया गया है। स्वतंत्रता का अनुभव, दुख से मुक्ति का मार्ग, समाज का दृष्टिकोण आदि इसमे बताया गया है। इसमे हम थेरियों की दीक्षा एवं उनके नैतिक सदाचार का जीवन का दर्शन पाते हैं।

बौद्ध धर्म की भिक्खुणी परम्परा और थेरीगाथा में थेरियों ने निर्वाण पद को परमसुख व जीवन की अंतिम उपलब्धी बताया है। थेरीगाथा में हम पाते है कि समाज विकास में स्त्रियों के सम्मान, अधिकार, स्वतंत्रता, समानता तथा समाज के सभी पहलुओं में स्त्रियों का महान योगदान है।

संक्षेप में शोध विश्लेषण से शोधार्थी निम्न लिखित बिन्दुओं के आधार पर निष्कर्ष पर पहुचे हैं।

1. थेरियों द्वारा अंधविश्वास और रूढ़ीवाद मुक्ति पर विचार अन्य स्त्रियों के ग्रंथ से भिन्न बौद्ध भिक्खुणी परम्परा पर आधारित है।

2. नैतिक सदाचार का जीवन बौद्ध दर्शन का मुख्य आधार है।

3. थेरीगाथा की थेरियों ने बौद्ध धर्म की मानवतावादी परम्पराओं को महिलाओं के विकास एवं जीवन में परमशंति के लिये सर्वश्रेष्ठ माना है।

4. बौद्ध समाज दर्शन में थेरीगाथा ग्रन्थ का वर्तमान समय में भी बहुत अधिक प्रसांगिक है।

5. थेरीगाथा बौद्ध दर्शन के प्रज्ञा, शील, समाधि को आधार बनाते हुये नैतिक व सदाचार जीवन पद्धति को बताती है। और निर्वाण प्राप्ति का मार्ग समाज के लिये प्रस्तुत करती है।

अतः थेरीगाथा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि थेरियों के द्वारा काव्य रूप में लिखित थेरीगाथा में अपने अनुभवों को प्रस्तुत करने से बौद्ध सिद्धान्तों की प्रासंगिकता जीवन मे आज भी बनी हुई है।

Summary

Pali language and literature has its own importance in Indian languages and literature. It has its own identity. There is vast literature in Pali language. Thierry saga is one of them. It is the source of inspiration for women in the whole world. This text is based on Buddhist principles, moral rules, Nirvana, modesty, samadhi, wisdom life experiences. In Buddhist ancient traditions Bhickhunies living and their experience has been described in poetic form, who had attained nirvana in their life. These Gathaas tell Buddhist nuns traditions and presents a perfect ideal for the present Bhickhunies.

In Therigatha, there were also described about Amrapali of Vaishali Nagar. She met Lord Buddha and his teachings influenced her and she became Bhickhuni. She spent the rest of his life as ideal Bhickhuni.

There were described in Theri-gathaa that Theries came from all sections. All were described about her life experiences and social system. They are told about attitudes towards women in society and religious superstitions. Everyone can be attaining salvation, enlightenment, and nirvana, internal peace in his own life through Buddhism. They were experiencing suffering, ignorance in all kinds of comfort features in their own family. They had experienced that purity of mind is not possible through worship, rituals and following traditions. Freedom of life and the way of salvation is following the Buddhist ideas and principles.

In the Therigathaa there were written about temper, superstitions, freedom of rituals and discover the truth. It described about experience the freedom, the path to salivation from sufferings, and the view of society etc. We found Therion's initiation and their moral virtue the philosophy of life in it. In Bhickhunies tradition of Buddhism and in Therigatha, it said that the final achievement of Theries is nirvana position and bliss of life. We find in Therigatha that their great contribution in social development, women rights, freedom, equality and all aspects of society.

In short, the thesis analyzed the researchers came to the conclusion based on the following points.

1- By Theries the liberation of superstitions and stereotypes thoughts are based on Bhickhunies Buddhist tradition is different from other women texts.
2- Buddhist philosophy is the main base of moral virtue of life.
3- Theries of Therigatha considered that the humanitarian tradition of Buddhism is best for the development of women and internal peace in life.
4- In the Buddhist social philosophy the text of Therigatha is much more relevant at the present time in society.
5- Therigatha makes wisdom, piety, meditation on base of Buddhist philosophy and tells ethical and moral way of life and offers the path of nirvana for society.

Therefore, the study concluded therigatha that Therigatha has been written by Theries in poetic form submitting their experiences in life still remains the relevance of Buddhist principles.